कड़कनाथ कुक्कुटों के आवास की संरचना एवं सिद्धांत

1. मुर्गी आवास शहर या कस्बों से दूर होना चाहिए।
2. पानी एवं विधुत की सही व्यवस्था होना चाहिए।
3. मुर्गी आवास पहाड़ी एवं निचले क्षेत्र में नहीं होनी चाहिए।
4. मुर्गी आवास में आवश्यक है कि सूर्य का प्रकाश मिलता रहे, लेकिन यह भी अति आवश्यक है कि सूर्य का प्रकाश आवास के अन्दर सीधा प्रवेश न करे। इससे बचने के लिए आवास की लम्बाई पूर्व से पश्चिम दिशा में होना चाहिए।
5. मुर्गी आवास की उँचाई 12 से 15 फिट तक होना चाहिए।
6. खिड़की से फर्श तक की उँचाई कम से कम 2 फिट होना चाहिए।
7. मुर्गी आवास की पैराफिट दीवार 1 से 1.5 उँची होना चाहिए।
8. मुर्गी आवास की चौडाई 20 से 25 फिट से अधिक नही होना चाहिए।
9. मुर्गी आवास से गन्दे पानी की निकासी का अच्छा साधन होना चाहिए।
10. मुर्गी आवास के आस पास झाड़-पेड नही होना चाहिए।

कड़कनाथ कुक्कुट प्रबंधन

मुर्गी पालन में कुक्कुट प्रबंधन का बहुत महत्वपूर्ण योगदान होता है कुक्कुट व्यवसाय में लगभग 80 प्रतिशत समस्यायें कुक्कुट प्रबंधन में की गई लापरवाही के कारण ही उत्पन्न होती है। अतः कड़कनाथ पालक को प्रबंधन के पूर्व जानकारी होनी चाहिए ताकि आर्थिक क्षति का सामना न करना पड़े।

ऐसा देखा गया है कि मुर्गी पालक मुर्गी शेड़ में क्षमता से अधिक चूजों का पालन करते हैं, और जगह के अभाव के कारण बीमारियों की शुरुआत हो जाती है। जगह का अभाव होने पर सबसे पहले बुरादा गीला होता है। अमोनिया बनती है फिर सांस संबधी समस्या उत्पन्न होती है, ई कोलाई बैक्टीरिया आती है, काक्सीडियोसिस परजीवी आती है, पीकिंग (नोचना) होती है। इस प्रकार कुक्कुट आवास बीमारीयों का जनक बन जाता है।

किसी भी मुर्गी पालक को ऐसे विकट समय का सामना न करना पडे, इसलिये व्यवसाय में कदम रखने के पूर्व पूर्ण विश्वास के साथ जानकारी अर्जित कर लेना चाहिए।

कड़कनाथ चूजे आने के पूर्व की तैयारी

1. बुरादा, पंख आदि मुर्गी आवास से दूर फेंककर जला देना चाहिए।
2. छत, फर्श, दीवार आदि ब्रश या बॉस की झाड़ु की सहायता से घिस-घिस कर साफ कर देना चाहिए। तत्पश्चात निरमा या ब्लीचिंग पाउड़र का घोल बनाकर फर्श पर 24 घण्टे तक भरा रहने देना चाहिए।
3. जाली दीवार आदि को फ्लेमगन की सहायता से निर्जमिकृत चाहिए।
4. पूर्णरूप से धुलाई हो जाने के पश्चात डिस्इफेक्टेन्ट दवा का छिडकाव अवश्य करना चाहिए ताकि बीमारी पैदा करने वाले कीटाणुओं को नष्ट किया जा सके। छिडकाव करने के 24 घण्टे पश्चात चूने में कॉपर सल्फेट के मिश्रण का उपयोग आवास की पुताई करने में करना चाहिए।
5. पानी के टैंक, ड्रम इत्यादी को धोकर चूने से पूताई कर लेना चाहिए।
6. दाने एवं पानी के बर्तन इत्यादि को भी डिस्इफेक्टेन्ट से साफ कर स्प्रे कर लेना चाहिए।

7. चूजे आने के दो दिन पूर्व से लकड़ी का बुरादा छानकर 2 इंच मोटा फर्श पर बिछा लेना चाहिए एवं चिक मेज (मक्के का दलिया) लेकर रख लेना चाहिए।
8. बुरादे के उपर पेपर (अखबार) बिछा लेना चाहिए।
9. चूजे के आने के पूर्व ब्रूडर चालू कर देना चाहिए ताकी ब्रूडर गरम रहे एवं चूजों के अनुकूल तापमान तैयार हो सके।
10. बुरादा बिछाने के पूर्व मुर्गी आवास के अन्दर सारे उपकरण रख कर परदे से आवास को बंद करके फ्यूमीगेशन या पोटेशियम परमेगनेट एवं फार्मलिन के मिश्रण से धुँआ करना चाहिए जिससे सूक्ष्म जीवाणुओं का विनाश हो सके ध्यान रहे कि फ्यूमीगेशन के 24 घण्टे बाद परदे खोलना चाहिए।
11. गर्मी के दिनों में पतली सुतली के परदों का उपयोग करना चाहिए बरसात के मौसम में प्लास्टिक के परदों एवं शीतकालीन मौसम में मोटे बोरे के परदों का उपयोग करना चाहिए।
12. परदे हमेशा उपर से 1 फिट छोड़कर बंद करना चाहिए कोशिश रहे कि ज्यादा से ज्यादा शुद्ध वायु चूजों को मिल सकें।
13. फार्म की धुलाई, पूताई होने के बाद कम से कम 5-10 दिन तक फार्म खाली रखना चाहिए।

कड़कनाथ चूजे के आठे पर व्यवस्था

1. यदि चूजे सुबह लाते है, तो चूजों को तुरन्त चिक बाक्स से अलग कर देना चाहिये दिन का समय चूजों को दाना एवं पानी पिलाने के हिसाब से अच्छा रहता हैं। यदि चूजों को शाम या रात में लाते है तो उस रात चूजों को चिक बाक्स में रहने देना चाहिए। यदि गर्मी के दिन हो तो चूजों को तुरन्त चिक बाक्स से अलग कर देना चाहिए।
2. चूजे के आने से पूर्व इलेक्ट्राल युक्त पानी या 8 से 10 % शक्कर या गुड़ का पानी तैयार कर रख लेना चाहिए। 3-4 घण्टे पश्चात चिक मेज (मक्के का दलिया) पेपर के उपर बुरक (फैला) देना चाहिए चिक मेज से 8 से 10 किलो प्रति हजार चूजों के हिसाब से बुरकना चाहिए। कमजोर चूजों को हाथ से पकड़कर दाना एवं पानी देना चाहिए। यदि चूजें एकाएक दाना पानी लेना नही समझ पाते तो अभ्यास कराना नहीं भुलना चाहिए।
3. आवश्यक दवाइयों का सग्रहण कर लेना चाहिए जैसे:-विटामिन बी काम्पलेक्स, एडी3ईसी, एन्टीबायोटिक्स इत्यादी।
4. पानी शुद्ध एवं स्वच्छ ही उपयोग में लेना चाहिए।

एक से सात दिन के कडकनाथ चूजों का रखरखाव

प्रथम दिन :-

1. ब्रूड़र का तापमान 90° F से 95° F तक होना अतिआवश्यक है।
2. चूजों को दाना खिलाने एवं पानी पिलाने का अभ्यास आवश्यक रूप से कराना चाहिए।
3. पानी में इलेक्ट्राल 24 घण्टे तक देना चाहिए, ई. केयर सी दिन में एक बार देना चाहिए।
4. 8 से 10 किलो चिक मेज 1000 चूजों पर देना चाहिए। मात्र 24 घण्टे चिक मेज पेपर में बुरक देना चाहिए। इसके बाद ट्रे में या बेबी चिक फीड़र में फीड़िंग कराना चाहिए।
5. ध्यान रहे कि बुरादे के उपर बिछाये गये पेपर कम से कम 6 दिन तक बिछे रहना चाहिए यदि पेपर गीला होता है, या फट जाता है तो उसे बदल देना चाहिए।